क्रीडा पत्र
गुरुकुल से जारी हस्तलिखित पत्रिका

(5) कीजपत्र
अंक - 2-3.

हस्तलिखित

क्रीग - पत्र

प्रथम प्रभात उदित तव गगने।
प्रथम सामरव तव तपोवने ॥

क्रीग विभाग का मुखपत्र "क्रीगपत्र"

वर्ष २८	सम्पादक — क्रीगमन्त्री	अङ्क संख्या २.३

श्रद्धानन्द स्मारक

किया स्वदेश स्वजाति का सौ सौ बार उद्धार।
अश्रद्धा युग में हुए श्रद्धा के अवतार ॥

कहते लोग वकील हा! छोड़ रहा घर बार।
हिमगिरि सुरसरि सोचते, अहो! बढ़ा परिवार ॥

भारत के जाँय सभी, जग जननी के पूत।
छूमन्तर से शुद्धि के, कर दी छूत अछूत ॥

घर में जा अल्लाह के, दिया खूब उपदेश।
अल्लाह औ' प्रभु एक हैं तजो द्वैत औ' द्वेष ॥

घुस न सकी सरकार की, जिस उर में संगीन।
देश-बन्धु की गोलियाँ, हुई वहीं लवलीन ॥

दयानन्द की वेदि पर दिया सीस बलिदान।
लेखराम के सतसखा मुंशी राम महान ॥

आर्यतत्व के स्नेह का, जलता जहाँ प्रदीप,
उस निज प्रिय कुल के रहो, स्वामिन् सदा समीप ॥

(श्री पं० चमूपति जी M.A.)

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ - जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आवे - एक हिलोर उधर से आए,
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि त्राहि रव नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का - धुआँ धार जग में छा जावें,
बरसे आग जलद जल जाएँ, भस्मसात् भूधर हो जावें,
पाप पुण्य सद्सद भावों की - धूल उड़ उठे दाएँ बाएँ,
नभ का वक्ष स्थल फट जाए, तारे टूक टूक हो जाएँ,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ - जिससे उथल पुथल मच जाए,

x x x x x x

माता की अमृतमय छाती का पय कालकूट हो जाए,
आंखों का पानी सूखे, हाँ - वह खून की घूंट हो जाए,
एक ओर कायरता काँपे, गतानुगति विगलित हो जावें,
अन्धे मूढ़ विचारों की वह - अचल शिला विचलित हो जाए,
औ' दूसरी ओर कंपाने वाला - गर्जन उठ धाए,
अन्तरिक्ष में एक उसी - नाशक तर्जन की ध्वनि मंडराए,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ - जिससे उथल पुथल मच जाए,

x x x x x x x

नियम और उपनियमों के - ये बन्धन टूक टूक हो जाए,
विश्वम्भर की पोषक वीणा के - सब तार मूक हो जाएं,
शान्ति दण्ड टूटे - उस महा-रुद्र का सिंहासन थर्राए,
उसकी शोषक श्वासोच्छ्वास - विश्व के प्राङ्गण में घहराए,
नाश! नाश!! हा महानाश!!! की प्रलयङ्करी आँख खुल जाए,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ - जिससे उथल पुथल मच जाए॥

x x x x x x

श्री "नवीन"

* *OM* *

Shradhanand Sports Tournament

PROGRAMME

27th July. Saturday Evening.

4. to 4.30.	Band & National song.
4. 30. to 7.	Wrestling.

28th July Sunday Morning.

6. to 6. 30.	Band & National song.
6. 30. to 7.	Acharya ji's speech.
7. to 8.	Ravan race & Archery.
8. to 8. 30.	Pillow fight.
8. 30. to 9. 30.	Obstacle race.
9. 30. to 10.	Frog race
10. to 10. 30.	Chair race

Evening.

4. to 6.	Lion race.
6. to 6. 30.	Diving.
6. 30. to 7.	Swimming under the water.

29th July Monday Morning.

6. to 6. 30.	Band & National song.
6. 30. to 7.	Hundred yards, race.
7. to 7. 30.	Long jump.
7. 30. to 8.	High jump.
8. to 9.	Gymnastics.
9. to 9. 30.	Putting the weight.
9. 30. to 10. 30.	Long race.

Evening.

2. to 7.	Long swimming.
7. to 8.	Havan & feast.

Note. In addition to this, some time will be setapart for fencing.

SHVETKETU.
Games Secretary

G. K. Press

स्वर्ण-रेणु

१

स्वाधीनता जीवन (जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में) की सर्वश्रेष्ठ साधना है। फिर भी क्या बात है कि २४ वर्ष का चोर कैदी, रिहा होकर भी बन्दी घर में रहने की इच्छा करता है!

२

आलोक की जगत पूजा करता है पर कितनी आश्चर्य की बात है कि आलोक में हिंसा छिपी है। दीपक का पुजारी अन्धकार मिटाता है पर वही पतंगों की हिंसा का कारण है।

३

मृत्यु क्या है? जगत की माता जब मानवरूपी शिशु को इहलोक रूपी कुच स्तन का दूध पिला लेती है तब उसे परलोक रूपी स्तन का दूध पिलाने के लिए पहले स्तन से अलग कर देती है। इस पृथक्करण का नाम ही मृत्यु है।

४

वर्षा क्या है? बादल के आंसू। ओस-कण भी रात्रि के शीत अश्रु हैं। वसन्त के फूल भी तो वृक्षों के आंसू हैं। कैसा अद्भुत दृश्य है। चारों ओर आंसुओं का करुणा साम्राज्य दिखाई दे रहा है॥

श्री शंकरदेव जी विद्यालंकार

ऊँची कूद



चिरकाल से प्रतीक्षित
"श्रद्धानन्द क्रीड़ा टूर्नामेण्ट" का द्वितीय दिवस

(ले० श्री चन्द्रकान्त जी उपस्नातक)

चिरकाल से प्रतीक्षित श्रद्धानन्द टूर्नामेंट का द्वितीय दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया जाता हमारी आंखों ने देखा। श्रद्धानन्द के पवित्र नाम पर किए जाने वाले टूर्नामेंट की प्रथम विशेषता यह थी कि इसके धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वैयक्तिक विभाग थे। यथोचित समय पर यज्ञशाला में श्री आचार्य जी का धार्मिक उपदेश हुआ। वह उपदेश क्रीड़ा से कितना सम्बन्ध रखता था यह क्रीड़ामन्त्री जी ही जानें।

अब टूर्नामेंट के राष्ट्रीय विभाग की बारी आती है। विशाल क्रीड़ा मैदान में, व्यायामशाला के पाइप बैंड के साथ यह कार्यक्रम शुरू होता है। राष्ट्रीय गान की मीठी और उत्साहपूर्ण ध्वनि से क्रीड़ाभूमि गूंज उठती है। इसके अनन्तर आचार्य जी का मनोहर, उत्तम शिक्षापूर्ण उपदेश इस प्रकार प्रारम्भ होता है:— "आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जिसके धार्मिक उद्देश्यों में शारीरिक उन्नति करना मुख्य उद्देश्य लिखा है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को खेलों में भाग इसलिए लेना चाहिए कि इन से आज्ञापालन की आदत आती है। आज भारत पराधीन है। नवयुवकों की बलि से इसका उद्धार हो सकता है। ब्रह्मचर्य और संयम से ही बलि होना आता है। भारत की जनता की असफलता इस बात को स्पष्ट तौर पर बताती है कि इसके आन्दोलन के संचालकों में ब्रह्मचर्य का अभाव था। उनमें संयम न था। क्रीड़ा क्षेत्र में खेलने वाला खिलाड़ी अपनी शरीर की उन्नति के साथ मर मिटने का भी पाठ सीखता है। मुझे खेद से कहना पड़ता है कि आज हमें हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की दृष्टि से भी यह विषय विचारना पड़ता है। मुसलमान यदि हम पर कृपा ही करेंगे तो हम दो कृपा करेंगे। पर यदि वे हमें एक थप्पड़ मारेंगे तो हम

लीला पत्र

तो मारेंगे। हम कायर नहीं पर सच्चे अहिंसक होना चाहते हैं। एक बात और भी है। British government से हमारा पाला पड़ा है। ऐसी शक्तिशाली गवर्नमेंट शायद ही संसार के तख्ते पर होंगी। इस वास्ते हमें अपने शरीर लोहे के बनाने होंगे। और यह तब सम्भव है जब कि हम खेलों की उपेक्षा न करें। यदि गुलामी न हो तो खेलें आज चर्खे से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।

इसके अनन्तर नौसिखिए कुछ विद्यार्थियों ने हमारे सामने महाभारत के उन दृश्यों को लाने का प्रयत्न किया जो अर्जुन, कर्णादि वीरों ने द्रोण के सामने किए थे। एक गते पर लक्ष्य वेध करना निश्चित था। वेधन के लिए एक तीर छोड़ने थे और दूर फेंकने की परीक्षा में तीर। ब्र० रामप्रसादजीने अपने नाम के आदि पद का महत्त्व बचाते हुए लक्ष्य वेधने में सफलता प्राप्त की। ब्र० शिवदत्तजी तथा देवनाथजी ने भी लक्ष्यवेध में पर्याप्त सफलता हासिल की। दूर फेंकने की परीक्षा में ब्र०—शिवदत्तजी को सफलता मिली। साधारण तौर पर इस अङ्क के विजय में यही कहा जा सकता है यह खेल-बिना तैयारी के भी-दर्शकों को आकर्षित किए रक्खी।

इसके अनन्तर "तकिया युद्ध" प्रारम्भ होता है। कई जोड़ियां थीं। खेल में भाग लेने वाले प्रत्येक भाई ने अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह से निभाया। ब्र० सोंगन्द, ब्र०-हरिदेवजी और ब्र० सुरेन्द्र जी- इन तीन भाइयों की खेल खूब प्रशंसनीय रही। ब्र० सुरेन्द्र की निर्भयता और स्थिरता दर्शकों का चित्त आकर्षित करती थी। यद्यपि अन्त में वे असफल हुए और आहत भी हुए पर खेल का महत्त्व बनाए रक्खा। ब्र० हरिदेव जी की प्रशंसा एक एक दर्शक दिल से कर रहा था। इतना डील डौल का शरीर किस प्रकार बड़ी पर ऐसा हुआ वार कर रहा है— यह देखते ही बनता था। आखिरकार Final की बारी आ ही पहुंची। एक ओर ब्र० हरिदेव जी थे दूसरी तरफ सफल तकिया योद्धा ब्र० सोंगन्द जी (जिनके पैरों में पीड़ा भी थी) आए। ब्र०-सोंगन्द जी इस खेल में सफल हुए। उनकी खेल भी शान में कमाल की रही। बचने में चुस्ती, वार करने में चालाकी, सहने में धैर्य और दाव न चूकने की अनुपमता यदि कहीं देखनी हो तो वह इन्हीं के खेल में देख सकता था। ब्र० हरिदेव जी का द्वितीय नम्बर रहा शायद इसका कारण उनका थकना भी हो।

चिरकाल से प्रतीक्षित "श्रद्धानन्द क्रीड़ा समारोह" का द्वितीय दिवस

खैर, अब बाधा दौड़ का महत्वपूर्ण प्रश्न आता है।

तख्त कूदना, पत्थर की ढेरी में से चार चार पत्थर उठाना, कुर्सियों के नीचे से जाना, एक टांग की दौड़, घुटने के बल चलना, गरम खीर खाना, बादाम तोड़ना, घोड़ा का कूदना आदि ये थीं बाधाएं। बाधाओं में पड़ने वाले वीर विरले ही थे। इन बाधाओं में से पार निकलने वाले वीरों में प्रथम नम्बर दिलीप कुमार जी का है। यद्यपि वे दूसरे पर आए थे परन्तु वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने बड़ी वीरता से और पूर्णता से बाधाओं का मुकाबिला किया था। द्वितीय नम्बर कुं० देवदत्त जी रहे। खीर खाने की बाधा में यदि वे असफल होते तो शायद प्रथम रहते। पत्थरों की बाधा के निरीक्षक की राय में इस बाधा को पार करने में कोई भी सफल नहीं हुआ है। हम इस "कुदक्क" के विषय में इतना कहना चाहते हैं कि "बाधा दौड़" में बाधाएं खासी रखनी चाहिएं। यह हंसी का स्थान नहीं है। शारीरिक बाधाओं के साथ मानसिक बाधाएं भी—जैसे कठिन गणित का प्रश्न रख देना, कुछ पृष्ठ का सविस्तार लिखना इत्यादि— अपना महत्व रखती हैं। हम आशा करते हैं कि क्रीड़ा मन्त्री जी के विशाल दयापूर्ण हृदय में इस प्रकार की आस्थान कभी न रहेगी।

इस प्रकार प्रातः काल की कार्यवाही खूब सफल रही। इसके लिए जितने धन्यवाद और जितनी प्रशंसाएं मन्त्री जी के नाम पर मैं कर सकता हूं - वह मेरा दिल ही जानता है।

क्रीडा पत्र

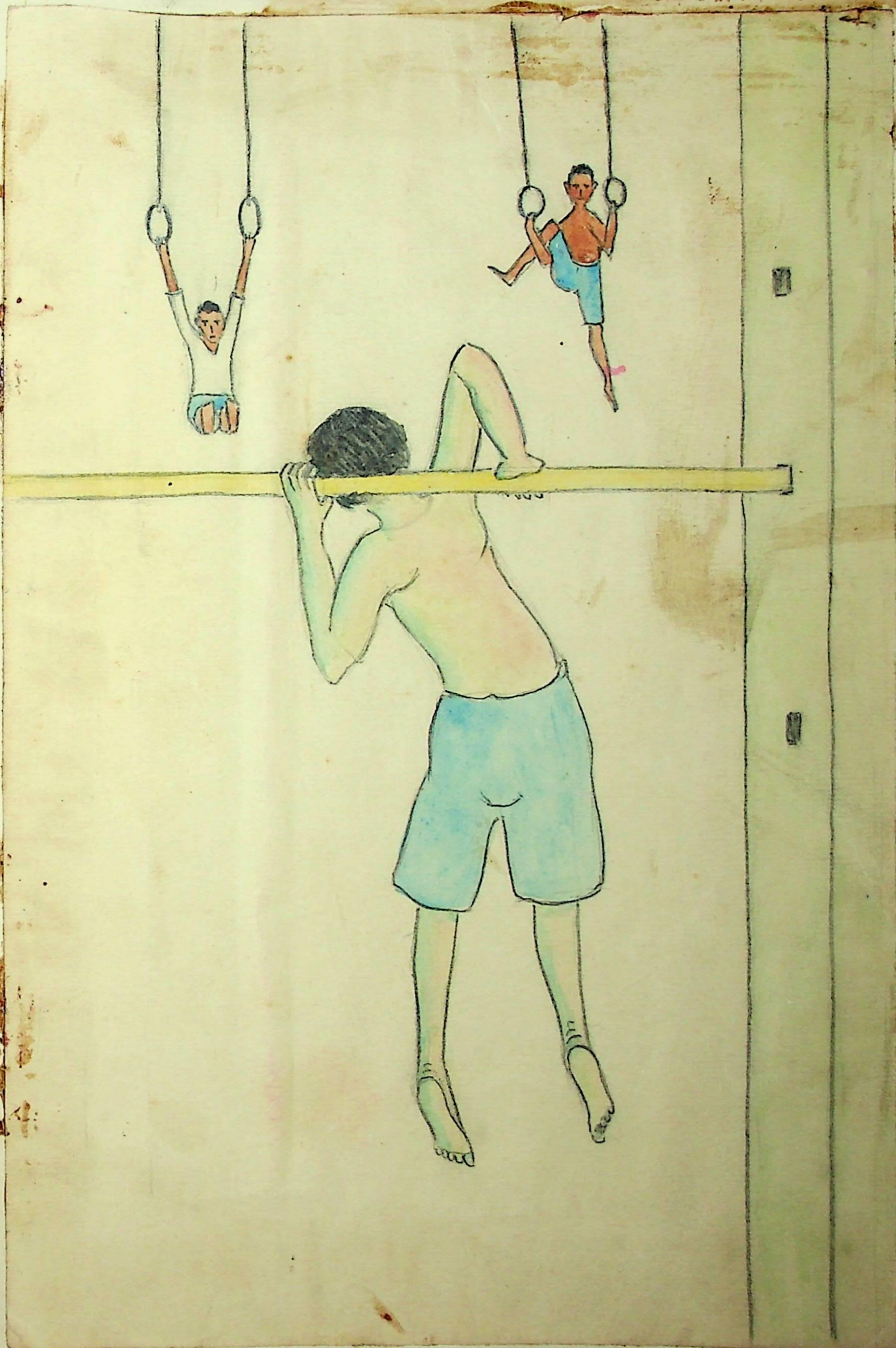
" तकिया-युद्ध "

(लेखक- [illegible])

"श्रद्धानन्द लीग-आन-मुरत्व" के प्रायः सभी खेलों से मेरा परिचय था परन्तु एक खेल था जिससे मैं बिल्कुल वाकिफ न था। वह था "तकिया-युद्ध" का खेल। मैं सोचता था कि योद्धा किस प्रकार बल्ली पर चढ़ कर दूसरे पर प्रहार करता होगा? दूसरा उन्हें सहते हुए कैसे स्थिरता से ऊपर बैठा रह सकता होगा? मैं इस खेल को असम्भव नहीं तो कठिनतम अवश्य समझता था। मेरा यह विश्वास "तकिया-युद्ध" के लिए किसी को भी तैयार न पाकर बहुत दृढ़ हो गया। मैंने देखा कि लीगमन्त्री जी के सतत उद्योग करने पर भी कोई आगे न बढ़ सका। जिस गोट से क्रीडामन्त्री जी पूछते, वे वही इन्कार कर देती थी। क्रीडामन्त्री जी को निराश जान श्री रामेश्वर तथा केशव देव जी ने अपने को इसके लिए समर्पित किया कि जिससे अन्य गोट भी "तकिया-युद्ध" के लिए आगे आ जाय। ऐसा ही हुआ। यद्यपि इस गोट में भाई केशव हार गए तो भी उनकी हार ने अन्य योद्धाओं को युद्ध के लिए अवश्य तैयार कर दिया।

इसके बाद गोट पर गोट तैयार होते गए। सब योद्धाओं को नहीं अपितु सब भाइयों को पक्का निश्चय हो गया कि हम सब यह युद्ध लड़ सकते हैं। आशा की जाती है कि "श्रद्धानन्द सप्ताह" पर इनाम के लोभ में ही नहीं किन्तु बिना लालच के ही बहुत से योद्धा "तकिया-युद्ध" में भाग लेंगे। अन्त में मेरा लीगमन्त्री जी से एक निवेदन है कि वे "तकिया-युद्ध" की ऊँचाई कम न करें परन्तु नीचे जहाँ सबकी बार कुछ कम खुदवाया था अधिक गहरा खुदवा दें। जब ८-१० योद्धा इतना ऊँचा बैठ कर बिना इनाम के लालच के युद्ध कर सकते हैं तब श्रद्धानन्द-सप्ताह पर इनाम पाने वाले-युद्ध में इससे नीचा स्थान अच्छा नहीं रहेगा। अधिक से अधिक यही हो

जिमनास्टिक



जाता है कि तकिया युद्ध की ऊंचाई और अधिक न बढ़ाई जाय।

मैंने क्या देखा ?

(श्री विमुखजी)

प्रातः काल का समय था। सारे कुलवासी उस शुभ घड़ी को देखने की प्रतीक्षा में थे - जिसके लिए कि वे अनेक दिनों से बाट जोह रहे थे - मैं भी उनमें से एक था। "स्वाध्याय-सम्मेलन" के बाद एक घण्टी बजी। हमने समझ लिया कि यह घण्टी किस लिए बजी है बस फिर क्या था, निकर धारण कर, हम सब रण-प्राङ्गण में उतर आए। प्रथम वाद्य गीत आरम्भ हुआ तदनु आचार्य जी का सुन्दर व्याख्यान हुआ। आचार्य जी ने बड़ी खूबी से यह दिखा दिया कि देशी खेलों से क्या लाभ है। उन्होंने कहा कि इससे मनुष्यों में Sportsman like spirit आती है तथा Discipline में रहना आता है और Character भी बनता है। फिर उन्होंने खेलों का राष्ट्रीय तथा धार्मिक महत्व दिखाया और सब कुल के ब्रह्मचारियों से आशा की कि वे एक दिन सब से अच्छे खिलाड़ी बन सकते हैं। इसके बाद वाद्य गीत हुआ। खेल आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम धनुर्बाण का खेल था। यह खेल बहुत ही मनोहर तथा सुन्दर था। स्वभावतः ही आज का दिन वसन्त ऋतु के समान सुहावना था। एक एक बालक खिलाड़ी आगे बारी बारी से आए। सबने ५-५ बाण मारे। कुछ बाण चूक गए तथा कुछ यथास्थान जा कर लगे। सौभाग्य से कोई सज्जन इन बाणों के शिकार नहीं हुए। यद्यपि ब्रह्मचारियों ने अभी धनुष-बाण विद्या आरम्भ ही की थी किन्तु इतने थोड़े समय के प्रयास के बाद ही परीक्षा देने का साहस देख कर सब उपस्थित सज्जनों को बहुत उत्साह हुआ। वे भी अपनी बारी की मांग करने लगे। अस्तु. इसके बाद "तकिया [illegible]" हुआ। यह खेल बहुत ही Attractive था। दो खिलाड़ी इकट्ठे चढ़ जाते थे तथा तकिया मार कर

गिराने का यत्न करते थे। गिरते हुए खिलाड़ी कभी तो दोनों टांगों से ऊपर ही लटक जाते थे और कभी कूद पड़ते थे। कई गिरते हुए भी एक दो तकिए प्रतिपक्षी को मार ही जाते थे। ये गिरते हुए, दर्शकों को क्षणभर के लिए तो हास्यरस के समुद्र में बेसुध डुबो देते थे। इस के बाद फिर बाधा दौड़ की बारी आई। इसमें खीर खाना तथा बादाम तोड़ना इत्यादि बातें बड़ी मनोरञ्जक थीं। इन सबके होते हुए भी खिलाड़ियों ने जिस बड़े उत्साह से इनको पार किया वह भविष्य में उनके जीवन के लिए बहुत सहायक होगा। इस जीवन रूपी संसार के मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना किस प्रकार किया जा सकता है इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक खिलाड़ी मानो हंसते हुए दे रहा था। इन तीनों कार्यों के बाद आज के पूर्वार्ध दिवस की कार्यवाही समाप्त हो गई।

खेल में उपस्थित होने वालों के लिए उचित प्रबन्ध था। दरियां तथा कुर्सियां लगी हुई थीं। प्रायः गुरुकुल के सब माननीय सज्जन इस खेल में उपस्थित थे। क्रीड़ा मन्त्री जी का उत्साह देखने लायक था। उन्होंने जिस परिश्रम से आज कार्य किया है वह भविष्य में आने वाले क्रीड़ामन्त्रियों के लिए अनुकरणीय रहेगा।



वॉली बॉल का मैच

"श्रद्धानन्द क्रीड़ा सम्मुख्य" का द्वितीय दिवस और उस पर वक्तव्य

"श्रद्धानन्द क्रीड़ा-सम्मुख्य" का द्वितीय दिवस और उस पर वक्तव्य।

(एक संवाददाता द्वारा)

क्रीड़ापत्र के सम्पादक जी बड़े उस्ताद, आए और लगे कहने कि आज की सारी रिपोर्ट क्रीड़ापत्र के लिए तुम्हें देनी होगी। अपने राम तो मौज करना चाहते थे वे कोई कोर कसर अपना मुंह फेर के चले। पर सम्पादक साहब भी निकले पूरे काइयां। ऐसा आड़े हाथों लिया कि छुटने का कोई रास्ता ही न छोड़ा। अपने राम बड़ी दुविधा में पड़े। अगर अपनी बात पर चलें तो सम्पादक जी की नाराज़गी का पारा पूरे १०० डिग्री पर पहुंच जाता और अगर सम्पादक जी की जी हुजूरी करें तो फिर दुनिया को मुंह दिखाने लायक न रहें। आखिर दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम का ख्याल कर और सम्पादक जी की इज्जत कहीं आस पास खड़े लोगों के सामने मिट्टी में न मिल जाय यह दिल में सोच अपने राम राम को छोड़ माया के ही पीछे चल पड़े। सोचा और कुछ नहीं तो लगे हाथ यही देखने को मिल जायगा कि दुनिया के आदमी कैसे मौज करते हैं? सम्पादक साहब अपनी कामयाबी पर फूल कर कुप्पा हुए जाते थे कि आज मुंशी को कैसे फंसाया पर यह न समझे कि अगर अपने राम चाहते तो इन्कार करके भरी सभा में उनकी नाक काट लेते और वे फिर इस तरह आस पास वालों पर रोब दाब न गांठ पाते।

सम्पादक साहब ने खूब अच्छी तरह से बार बार ताकीद करके कह दिया कि ठीक छ बजे खेल के मैदान में खेले हुए [illegible] ठीक समय पहुंच जाना कहीं [illegible] में न रह जाना। अपने राम भी सम्पादक साहब से दस्तबस्ता विदा हो कलमदवात यानी फौन्टेन पैन यानी अगर हुक्म बदली माफ हो तो - यहीं [illegible] के मार्फ़त, मशीनगर्म और कुछ कागज़ - नहीं नहीं - कागजात यानी कमाल पत्र जेब में रख लगे रस्ता नापने। और कछुए की चाल को मात करते हुए दनदनाते ठीक मुकाम पर पहुंच गए। पहुंचते साथ ही कान में चपरासी की घंटे पर दी गई चौथे की आवाज़ पड़ी। अपने राम को बड़ी खुशी

क्रीड़ा पर्व

हुई और खुदा का शुक्रिया अदा किया कि ठीक मौके पर पहुंच गए। सम्पादक साहब के घर हिन्दुस्तान में ७ बजे होते हैं यह तो पहिले ही अपने राम जानते थे। वहां पहुंचते ही देखा कि दरियां बिछी हैं, कुर्सियां लगी हुई हैं, एक खास सफेद कुर्ता और नीली निकर पहिने इधर से उधर भागते से घूम रहे हैं, कभी इधर किसी नौकर को डांट रहे हैं तो कभी इधर किसी को फ़रमान दे रहे हैं। पूछने पर मालूम हुआ कि यह महाशय तमाशबीनों के ज़मादार यानी क्रीड़ामन्त्री यानी नई परिभाषा में गेम्स के डेरेक्टर हैं। अपने राम भी कोने की एक कुर्सी संभाल कर बैठ गए।

शुरू शुरू में बैंड फूंकने का ऑर्डर मिला और उसकी आवाज़ पुराने लोगों के कहने के मुताबिक दिग दिगन्त को कम्पायमान करती हुई, शोर के जिनके कान भी नहीं आंखों के अन्तःस्तल में प्रवेश कर हड़बड़ाहट में — ज़मीन को हिलाती हुई, पहाड़ों और जंगलों में निनादित होती हुई विश्व में व्याप्त हो गई। इस के बाद हारमोनियम पर बन्देमातरम् का गीत गाया गया। अपने राम को कांग्रेस में बन्देमातरम् सुनने का मौका मिला था। वहां और यहां इसमें आकाश और पाताल का अन्तर पाया। बन्देमातरम् क्या था ग़रीबों की बेबसी की आह थी। शायद गाने वालों को हिन्दुस्तान की बेबसी का इतना ग़म था कि आवाज़ मुंह से बाहिर निकालने पर भी अन्दर ही रह जाती थी।

इसके बाद खेल के मैदान में जिसकी लम्बाई ठीक २०० गज़ न एक इंच कम न एक इंच ज़्यादा थी कुछ आदमी कमर कस कर दौड़ने के लिए आते दिखाई दिए। पूछा कि क्या हो रहा है तो पता चला कि तेज़ दौड़ यानी प्रोग्राम के मुताबिक हन्ड्रेड यार्ड्स रेस हो रही है। बिगुल की आवाज़ हुई और आंख के झपकते झपकते सबके सब मैदान के एक किनारे से दूसरे किनारे पर पहुंच गए। पर इन में सबसे अव्वल जो आया उसका नाम श्री इन्दुचन्द्र विद्यो-वध कहते थे। दोयम और सोयम का नाम श्री सुरेन्द्रनाथ और श्री रामप्रसाद थे। लोग श्री इन्दुचन्द्र की वाह वाह कह रहे थे।

अभी अपने राम फुरसत भी न ले पाए थे कि मालूम हुआ कि अखाड़े में लम्बी

"कूदफांद क्रीड़ा आयोजन" का द्वितीय दिवस और उस पर वक्तव्य.

कुछ ही लॉङ्गजम्प होने वाली है। अकस्मात् से कुछ लोग उन आगे आड़ कर बैठ गए। कुछ लोग इतराज़ करने लगे कि हमारे आगे क्यों बैठ गए? इतना सुनना था कि अपने राम के दिल में आग लग गई। तपाक से डांट कर बोले तुम्हें मालूम नहीं ओड़ापन्थ के कॉरेस्पॉन्डेन्ट हैं। दिन रात मगज़पच्ची करते हैं फिर भी तुम आराम से नहीं बैठने देते। इतना कहना था कि लोग भीगी बिल्ली की तरह चुप-चाप अपनी जगह सरक गए।

थोड़ी देर के बाद एक के बाद एक कूदने वाला धमधम आ कर गड्ढे में पड़ने लगा। कुछ तो इतनी लम्बी छलांग मारते थे कि लोग वाह वाह करते ही रह जाते थे पर कुछ आटे की बोरी की तरह से इस तरह गिरते थे कि लोग हंसते हंसते लोटपोट हो जाते थे। कूदने वालों में अव्वल श्री इन्द्र मनोहर १८ फी० ६ इंच, दोयम श्री रामप्रसाद १७ फी० ५ इंच और सोयम श्री देवनाथ जी और श्री सुरेन्द्र १७ फी० ४ इंच कूदे।

लांग जम्प के बाद जमनास्टिक शुरू हुई। कुछ आदमी जो इस के आदी थे अपनी यूनिफौर्म में यानी नीली निकर पर पेटी बांध कर अखाड़े में उतर आए। एक अच्छे डीलडौल का और मज़बूत आदमी जो रंग में गोरा, मूंछ से मिलता जुलता था सबको कमाल कर रहा था। पूछने पर मालूम हुआ कि ये साहब इनके मास्टर हैं, हरिखण्ड के रहने वाले हैं और उपेन्द्र नाम से हिन्दुस्तान में मशहूर हैं। अपने राम तो इस ज़माने में ऐसी अच्छी उछलकूद को देख हनुमान की फौज यानी बन्दरों की पेड़ों से पेड़ों पर उछल कूद और चढ़ उतरना वगैरा याद कर दिल ही दिल खुश हो रहे थे। यह जमनास्टिक पिछले ४ सालों में अपने राम को देखनी नसीब हुई थी। अब इस को देख कर अपने भाग्य और सम्पादक जी के दिमाग़ को सराहा कि अच्छे मौके पर पहुंचा। इन खेलों के नाम धाम तो मालूम नहीं पर पूछने पर जो कुछ नाम और नतीजे मालूम हुए वे यह हैं—

रिङ्ग में अव्वल श्री [illegible] और दोयम श्री देवनाथ जी

क्रीड़ा पर्व

और श्री नित्यानन्द रहे। ट्रेपेज़ी में भी श्री महेन्द्र अव्वल और श्री नित्यानन्द दोयम रहे। हां पैरेलल बार में श्री नित्यानन्द अव्वल और श्री महेन्द्र दोयम रहे। श्री महेन्द्र जी ने जमनास्टिक में बहुत नामवरी हासिल की।

कुछ देर बाद गोला फेंकने की बारी आई। अपने राम तो समझे थे कि किसी तोप पर गोला फेंका जायगा पर वहां एक मोटा सा गोला जो भार में ५ सेर के करीब था बिना बारूद के सिर्फ़ कसरत के वास्ते फेंका जा रहा था। दायें हाथ से श्री इन्द्रचन्द्र ने ३२ फी० ८ इंच, श्री आत्मानन्द ने ३० फीट ७ इंच और श्री देवदत्त ने २७ फी० ८ इंच गोला फेंका। पर ओवर-बॉल और दोहाथ से ऊपर फेंकने में श्री आत्मानन्द ३७ फी० गोला फेंक कर सबसे बाज़ी मार ले गए।

आखिरी खेल और जो थी भी बड़े मज़ेदार कुर्सीदौड़ हुई। इसमें श्री इन्द्रचन्द्र अपनी चालाकी और फुर्ती से आखिर तक पहुंच पाए। बाकी धीरे २ देखने वालों की हंसी खुशी में खेल से अलग होते चले गए। और इसके बाद अपने राम भी अब बेचारे कुर्सी छोड़ अपने यहां आ विराजे और ओपनिंग आने के समाचार पत्रकुटी नामक में दर्ज कर देने जाकर इन्होंने यह काम किया।

"श्रद्धानन्द-लीग-सान्मुख्य" का तृतीय दिवस

"श्रद्धानन्द-लीग-सान्मुख्य" का तृतीय दिवस

(श्री शिवहरि मुखर्जी)

श्रद्धानन्द सान्मुख्य का तृतीय दिवस उसी स्थान पर उसी समय बड़ी सज धज से मनाया जाता देखकर हृदय बहुत प्रसन्न हुआ। बैण्ड की उत्साहमयी नाद कानों में गूंज रहा था कि एकदम राष्ट्रिय गीत ने सोने में सुगन्ध का काम किया। खेलने वालों के अंग-अंग फड़क उठे। लम्बी कूद का सान्मुख्य होने से पहिले 'तेज़ दौड़' प्रारम्भ हुई। व्यायामशाला के सामने का विशाल क्रीड़ा क्षेत्र दौड़ के लिये नियत किया गया था। हिम्मत बाँधकर आशा से भरे कुछ छोटे तो कुछ दीर्घकाय दौड़ने वाले दौड़ने लगे। देवराज इन्द्र जैसे अनेक बातों में देवों से आगे रहते हैं ऐसे ही इस बात में भी सबसे आगे आगये इसमें कोई नई बात नथी! ब्र० राम प्रसाद जी ने भी कदम सम्भाले रक्खा, बहुत न पिछड़े, दूसरे पर आ उतरे। दौड़ का 'सरिया' हमारी राय में कुछ थोड़ा था। २ फ़र्लांग या ४ फ़र्लांग कम से कम होना चाहिये था। शायद मन्त्री जी को स्थान ने अलाऊ (allow) न किया हो; ख़ैर। अब लम्बी कूद का सान्मुख्य आरहा है, लम्बे-लम्बे, दीर्घकाय, डील डौल वाले नवयुवक ब्रह्मचारी श्वास भरते हुए बेचारी धरा पर मौके बेमौके निर्दयता से पिच (Pitch) देते हुए लगे जमीन को मापने। इसमें हमारे वही पूर्व परिचित स्वनाम धन्य इन्द्रदेव ही आगे रहे। आपने स्वर्ग के साम्राज्य से सन्तुष्ट न रहकर मर्त्यलोक को भी बड़े रकदमों से माप ही तो डाला। आप १८ फ़ीट ८ इञ्च कूदे, जो कि Ideal कूद थी। खूब रही! द्वितीयवार यहां पर भी हमारे राम बाबू ही आये मालूम होता है इन्होंने देवराज इन्द्र का पीछा न छोड़ने की ठानी थी। तीसरे थे श्रीदेवनाथ दौड़ सधी हुई जंचती थी, अपनी शान की यह भी एक थी। ब्र० सुरेन्द्र की कूद भी कुछ ऐसी वैसी न थी, हमारी आशाओं से कहीं अधिक थी। अब धरती

अब धरा को नाप से ही सन्तुष्ट न रहकर आसमान पर धावा बोलने की वीरों ने ठानली, लगे ऊंचा ऊंचा कूदने। हमारी राय में कूदने की सफ़ाई, चालाकी आदि आर्ट में श्री सुरेन्द्र अधिक प्रिय लगते थे। उनका राज्य भी तो ऊपर ही रहा न! क्यों न हो। परन्तु परीक्षा परिणाम अभी निकला तो नहीं तो भी प्रमाण से यही सिद्ध हुआ है कि ब्र० विश्ववीर ही इस बात में बाज़ी मार ले गये हैं। तो भी हम ब्र० सिद्धेश्वर जी की प्रशंसा किये बिना न रहेंगे। आप की कूद भी अच्छी थी। शायद उनको उनकी लम्बाई का फ़ायदा मिला हो; पर परीक्षा में यह तो कोई नहीं देखता। श्री देवनाथ तथा श्री धीरेन्द्र भी धीरता से कूदते रहे। इसलिये इन्होंने भी कम से कम एक वार तो "वाह-वाह" या "खूब खूब" कहलवा ही तो लिया।

क्रीडा पर्व

अब उत्तम तथा महत्व पूर्ण प्रोग्राम शुरू होता है। यह था जमनास्टिक का प्रोग्राम। सब नौसिखिये लगते थे। करामात दिखाने कोई न आया प्रतीत होता था पर कसरत करने या अभ्यास करने। हम अपने तहे दिल से श्री राजेन्द्र कुमार की खूब प्रशंसा करेंगे। आपने जितने करतब दिखाये, सच्चे हुए थे- मुश्किल से- जंचते थे; साफ थे। आपका शरीर भी इसकी गवाह साफ २ देता था। फिर बारी आती है श्री नित्यानन्द की। आप हैं छोटे पर उनके मुकाबले में काम खूब कर दिखाया। दर्शक मन-ही-मन "खूब - खूब" करते थे। आपका भी शरीर करतब के comparision में fit था। हम आशा करते हैं कि श्री नित्यानन्द इस विद्या में यदि दत्त चित्त हो लगे रहेंगे तो वे अवश्य सफल होंगे। इनके अतिरिक्त ब्रह्मचारी प्रेम सागर जी ब्र. सत्यदेव जी दर्शनीय खूब रहे। सबसे अधिक प्रशंसनीय थे दो महानुभाव; एक श्री देवनाथ, दूसरे श्रीराम बाबू। आपने कभी इस काम में हाथ भी कभी न लगाया होगा परन्तु तोभी पहिली बार की कोशिश में ही करशों से बढ़िया रहे। इस विभाग का परिणाम इस प्रकार से है।—

Rings - प्रथम श्री राजेन्द्र, द्वितीय श्री नित्यानन्द तथा श्री देवनाथ।

ट्रैजेडी - प्रथम श्री राजेन्द्र, द्वितीय श्री देवनाथ जी.,

पैरेलल बार - प्रथम श्री नित्यानन्द द्वितीय श्री राजेन्द्र।

अब गोला फैंकने की बारी आती है। यह कोई मामूली बात नहीं। आजकल भारत की स्थिति को देखकर गोला फैंकना उचित तो क्या आवश्यक कर्तव्य लगता है। सीधा गोला फैंकने में ब्र. इन्द्र अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार प्रथम रहे। द्वितीय ३० फीट के करीब गोले की मार थी — मार का 'थो' था। हमारे अत्लानन्द जी वर्णी गज़ब के रहे। उन्होंने दो चार बार तो श्री इन्द्र जी के दिल को खुश्क कर दिया था। आखिर किन्हीं कारणों से आप द्वितीय ही रहे। तोभी इसका बदला आपने उलटा गोला फैंकने में निकाल दिया और प्रथम निकल आये। ब्र. देवदत्त चतुर्दश द्वितीय रहे। गोला मार में ब्र. सुरेन्द्र भी खूब रहे चाहे इनाम की कोटि में न आये हों पर आर तो जानते ही थे। अब नहीं तो तब प्रथम आवेंगे ही।

अब एक रसमयी, हास्य भरी कुर्सी दौड़ दौड़ी आयी। यह खूब रही। इस में कौन विजयी रहे? जिसको जीतने की आदत पड़ गई थी। वही यहां पर भी — वे थे ब्र. इन्द्र। आप और ब्रह्म. सत्यदेव जी ने जनता को खूब हंसाया। दोनों ही खुब चे Players थे। इस प्रकार श्रद्धानन्द सप्ताह के तृतीय दिवस के प्रातः काल की कार्यवाही समाप्त हुई। आज की खेलों में सबने खूब आनन्द अनुभव किया। खेल खूब सफल रहे। दर्शकों का आना व्यर्थ न गया। आज भी हम अपने अत्यन्त उत्साही, कार्यशील, निपुण मन्त्री जी प्रशंसा शब्दों में न करते हुए तहे दिल से करते हैं



[illegible]

[illegible] होता है। यह था गमनाब्दि क्वार्टर [illegible] दिखाते कोई न आशा प्रतीत होता था [illegible] हम अपने तहे दिल से श्री [illegible] दिखाये, सच्चे हुए थे [illegible] दूसरी गवाह साफ़ २ देता थी [illegible] उसके मुकाबले में काम [illegible] "खूब - खूब" करते थे। आपका भी शरीर [illegible] हम आशा करते हैं कि श्री नित्यानन्द [illegible] अवश्य सफल होंगे। इनके अतिरिक्त [illegible] खूब रहे। सबसे अधिक [illegible] आपने कभी इस काम में [illegible] की कोशिश में ही कइयों से [illegible] :—

[illegible] देवनाथ।

[illegible] ,

[illegible] द्वितीय श्री राजेन्द्र।

[illegible] यह कोई मामूली बात नहीं। आजकल [illegible] उचित तो क्या आवश्यक [illegible] अपनी स्वाभाविक आदत के [illegible] गोले की मार थी — मार [illegible] उन्होंने दो चार बार तो श्री इन्द्र [illegible] किन्हीं कारणों से आप द्वितीय ही [illegible] निकाल दिया और प्रथम [illegible] रहे। गोला मार में श्री सुरेन्द्र भी खूब रहे [illegible] तो जानते ही थे। अब नहीं तो [illegible]

[illegible] आयी। यह खूब रही। [illegible] यहां पर भी — वे थे [illegible] खूब हंसाया। दोनों ही [illegible] के प्रातः काल की [illegible] अनुभव किया। खेल [illegible] हम अपने [illegible] तहे दिल से करते हैं

लम्बी कूद



सम्पादकीय

श्री शंकरदेव जी कुल में-

बड़े सौभाग्य से जब कि "राष्ट्रीय गान" का प्रारम्भ होने ही वाला था तब श्री शंकरदेव जी सीधे "राष्ट्रीय गान" की स्थली में आ पहुंचे। आते ही आपने अपने "पुराने काम" को संभाल लिया। आपकी इस उदारता के कारण "वह काम"- वन्देमातरम का गायन बड़ी सफलता के साथ संपन्न हुआ। हम अपने भाई से पूर्ण आशा रखते हैं कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार अपने "पुराने काम" को संभाल अपनी उदारता का परिचय देने में पीछे नहीं रहेंगे।

सहर्ष स्वीकृति.

"एक दर्शक" और श्री चन्द्रकान्त जी ने हमें अपने लेखों द्वारा जिन बातों की ओर हमारा ध्यान खींचने का प्रयत्न किया है उनको हम उनके धन्यवाद सहित सहर्ष स्वीकार करते हैं। उन्होंने वास्तव में हमारा इस ओर ध्यान खींच कर एक ऐसा कार्य किया है जिस के कारण कि हमारा एक बड़ा भारी भ्रम दूर हो गया है। हम समझते थे कि हमारे भाई "[illegible]" खेलने में हिचकिचाहट इस लिए कर रहे हैं कि एक तो बल्लियां बहुत ऊंची हैं दूसरे खेल में कोई इनाम भी नहीं है। इस भारी भ्रम को दूर कर सचमुच उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया है। हम अपने भाइयों से पूर्ण आशा रखते हैं कि वे "श्रद्धानन्द सप्ताह" में "एक दर्शक" की बातों क्रियान्वित करने का प्रयत्न करेंगे।

अङ्क संख्या के सम्बन्ध में

पत्रिका को कुछ भी ध्यान न रक्खा गया था, इस बार इस अङ्क निश्चित समय पर निकालने का। किन्तु समयाभाव और लेखों के देखने की असुविधा के कारण हम ऐसा करने में असमर्थ रहे। इस अङ्क में २२ और २३ अङ्क दोनों ही सम्मिलित हैं। आशा है विलम्ब के कारण यह पत्र आपको जो उचित से देर से मिल सका है - इसको आप हमारी विवशता के कारण ध्यान में न लायेंगे।

लम्बी तैरी

ब्र. देवनाथ.	५. ३५.
ब्र. हरिदेव	५. ३६.
ब्र. धीरेन्द्र	५. ३६$\frac{1}{2}$.

ब्र. चित्रांगद को द्वितीय इनाम से एक इनाम स्वीकृत हुआ.

सिंह तैरी-

ब्र. चित्रांगद - २ मिनट ५ सैकिण्ड.

ब्र. देवनाथ + ब्र. आत्मानन्द - २ मिनट २० सैकिण्ड.

श्री वासुदेव जी V. A. निरीक्षक. १ मि. ४६ सैकिण्ड.